भए प्रगट कृपाला दीनदयाला जसुमति हितकारी

https://pdffile.co.in/

।। भए प्रगट कृपाला दीनदयाला जसुमति हितकारी ।।

भये प्रगट कृपाला दीन दयाला ,यशुमति के हितकारी ।
हर्षित महतारी रूप निहारी,मोहन मदन मुरारी ॥ १॥

कंसासुर जाना अति भय माना ,पुतना बेगि पठाई ।
सो मन मुसुकाई हर्षित धाई ,गई जहाँ जदुराई ॥ २॥

तेहि जाइ उठाई ह्रदय लगाई,पयोधर मुख में दीन्हें ।
तब कृष्ण कन्हाई मन मुसुकाई ,प्राण तासु हरि लीन्हें ॥ ३॥

जब इन्द्र रिसाये मेघ बुलाये ,वशीकरण ब्रज सारी ।
गौवन हितकारी मुनि मन हारी,नखपर गिरिवर धारी ॥ ४॥

कंसासुर मारे अति हंकारे,वत्सासुर संहारे ।
बक्कासुर आयो बहुत डरायो,ताकर बदन बिडारे ॥ ५॥

pdffile.co.in
https://pdffile.co.in/

अति दीन जानि प्रभु चक्रपाणी,ताहि दीन निज लोका ।
ब्रह्मासुर राई अति सुख पाई ,मगन हुये गये शोका ॥ ६॥

यह छन्द अनूपा है रस रूपा,जो नर याको गावै ।
तेहि सम नहिं कोई त्रिभुवन माँहीं ,मन-वांछित फल पावै ॥
७॥

दोहा -नन्द यशोदा तप कियो,मोहन सो मन लाय ।
तासों हरि तिन्ह सुख दियो ,बाल भाव दिखलाय ॥

****

pdffile.co.in

https://pdffile.co.in/

pdffile.co.in

PDFfile is Created by –
https://pdffile.co.in/

https://pdffile.co.in/